तेसर जीव

(उड़िया कथा)- मनोजदास

अनुवादक - उपेन्द्र दोषी

कालि्ह अपराह्नमे उत्तर दिस छोट सन पहाड़क शिखर पर पसरल रहए मेघक दूटा टुकड़ी : पर्वत - स्थवन -राजिक कबरीमे खोंसल दूटा फूल सन। किएक तँ सूर्यक किरणसँ ओ मेघखण्ड रंगीन भय गेल छल। हम ई लक्ष्य कयने रही कंकड़बला निर्जल पथपर साइकिल चलबैत काल। हम पश्चिमाभिमुख जाइत रही, तेँ बड़ी काल धरि हमर दृष्टि उत्तर दिगन्तक एहि सुकुमार दृश्यपर अँटकल रहल।

अनचोके हवाक एकटा झोंक आयल आ हमर पीठ पर एक थाप लगा चल गेल। हमरा अनुभव भेल जे मेघ भयानक रूप धऽ लेने अछि। मेघ उमड़ि-उमड़ि कऽ पूरा आकाशकेँ छापि लेने रहय। केवल पश्चिमी क्षितिज पर कने-कने लाली बाँचल रहैक। सेहो तुरंते झँपा गेलैक।

क्रमहि हवा सर्द होमय लगलैक । मेघ डराओन रूप धऽ धरतीपर आक्रमण हेतु तैयार छल। बरखा आबि गेल। हवाक एकटा प्रबल झोंक हमरा साइकिल सहित धरती पर पटकि देलक। हमर-पातर -छीतर कपड़ा भीजि कऽ सार्जेण्टक कपड़ा सन भारी भऽ गेल रहय। हम रुकि-रुकि साइकिलक पहियासँ कादो हटाबी आ कोनो तरहें साइकिलकेँ घीची। कोनो तरहें पर्वतक कातमे एकटा खोपड़ी -सन सरायमे पहुँचलहुँ। सोचने रही, एक कप चाह पीबि कऽ फेर आगाँ बढ़ब। मुदा ई स्थान तऽ हमरा लेखे पाँतरक गाछ भऽ गेल। अन्तमे निश्चय कयलहुँ जे राति एतहि गमाबी। एकर कच्चा मकानक छत पर एकटा कोठली रहैक। सरायक मालिक एक हाथमे लालटेन लेने आ दोसरा हाथेँ कीड़ा- मकोड़ाकेँ भगबैत, भीजल सीढ़ी पर देने हमरा ऊपर अनलक। कोठलीमे नान्हि टा जङला रहैक जाहिँस बजार आ मैदान दुनू दृश्य होइक। देबाल आ चार दुनू बीचक खाली जगह झरोखाक काज कऽ रहल छल। देबाल पर बाल गोपालक पोषणवाला पुरान कलेण्डर टाङल रहैक। इएह कलेण्डर कोठलीक शोभा छल। बालगोपालक पोषण कोनो बेबीफुडसँ भेल रहनि, तेँ ने ओ एतेक बलिष्ठ भऽ गेल छलाह जे

आसानीसँ एकटा गेंडाकेँ नथने रहथि। सरायक मालिक अल्पभाषी रहय। किछुए शब्दमे ओ स्पष्ट कऽ देलक जे ई केबिन विशिष्ट थिक। जाहि गंभीरतासँ ओ ई सभ कहलक ताहिसँ हमरा कनेको अनसोहाँत नहि लगैत जँ ओ इहो कहैत जे निजाम अथवा आगा खाँ पर्यन्त एहिठाम राति बिताबऽ तखनहि आबि सकैत छथि जखन हुनका भाग्य संग देतनि। एहि विशिष्ट केबिनक किराया छल मात्र एक अठन्नी, पूरा एक दिन आ एक रातिक हेतु। लालटेन जँ भरि राति जरायब तँ पन्द्रह पाई अतिरिक्त । हम एक मग चाह पीलहुँ आ सरायक मालिककेँ विदा कयलहुँ। लालटेमो जल्दीए मिझा गेल, जाहिसँ एकटा गिरगिटकेँ बड़ निराशा भेलैक, कारण लालटेमक चारूकात औनाइत फतिंगा सभक लोभे ओ गिरगिट लालटेमक बहुत लग चल आयल रहय। हम कपड़ा बदललहुँ आ खाट पर पसरि गेलहुँ। पड़ले-पड़ल खिड़कीसँ बाहरक दृश्य देखऽ लगलहुँ। सौभाग्यसँ हमर ओढ़ना एहन छल जाहिपर बरखाक कोनो प्रभाव नहि। एखन बरखा तँ नहि भऽ रहल छल मुदा जाहि तरहक घटाटोप छल, बुझाइत छल जे एकबेर फेर बरखा होयत। सरायक बाहर ठाढ़ ओ खजूरक गाछ जेना रातुक अन्हारसँ डेराकऽ हमर खिड़कीक आओर लग अयबा लेल आतुर छल। नीचाँ सरायक मालिकक कोठली खुजल रहैक। ओहिसँ प्रकाशक एकटा रेखा सड़क पर पसरल रहैक। तखने हम देखलहुँ जे एकटा भुच्चड़ सन ग्रामीण युवक अपन कान्हपर मोटा लदने एकटा जनानीक संग ओहिठाम पहुँचल। ओकरा एकटा फूट कोठलीमे जगह देल जा रहल छैक। युवक आ युवती दुनू पानिसँ बोदरि भेल अछि। जहाँ ओ दुनू बरंडापर पएर रखने रहय कि हवाक ध्वनिसँ पूरा घाटी गूंजि उठल। मेघ जोर-जोरसँ बरिसऽ लागल। बिजलीक चमकमे दूरक पर्वत उड़ैत जकाँ बुझायल। हम खिड़की बन्द कऽ लेलहुँ। जौरसँ घोरल खाट मने उड़नखटोला भऽ जाए चाहैत छल। जेना-जेना हमरा निद्रा आबय लागल, हम परी-लोकमे बौआय लगलहुँ। हमरा समक्ष स्मृतिक अन्हार गुफासँ कतेक हेरायल भोतिआयल चेहरा आबय लागल। ओहि चेहरामे बौन आ राक्षसक चेहरा सेहो रहय, जकरा संगे हमरा खूब मोन लगैत रहय। हम ई नहि कहि सकैत छी जे हम कतेक दूर धरि पहुँचल रही। मुदा, जखन हम जगलहुँ तऽ हमरा लागल जेना हम एकटा राजकुमार भऽ गेल छलहुँ, एहन राजकुमार सन जे तिलिस्ममे सूतल राजकुमारीकेँ चोराकऽ जादूक द्वीपसँ घुरि रहल हो।

चारक नीचाँ एक नान्हि टा चिड़ै चहचहा रहल छल। लागल जेना ओ हमरा जगा रहल हो! हम खिड़की फोललहुँ। भोर भऽ गेल रहैक, मुदा अन्हार एखनहु रहबे करैक। बहुत शान्ति रहैक। मूसरधार वर्षा भेल रहैक। हवा सेहो गजब। फलस्वरूप गाछ -बिरिछ उखड़ि गेल रहैक आ ओकर डारि-पात एमहर - ओमहर पानिक नान्हि-नान्हि टा राशिमे छिड़ियायल रहैक। मुदा

ओहि जल-राशि सभमे क्षितिजक लालिमा सेहो झलकि रहल छलैक जाहिसँ सूर्योदयक आभास भऽ रहल छल।

चिड़ै तँ उड़ि गेल मुदा नीचामे जे गरमा-गरम बहस भऽ रहल छलैक ताहिसँ हमर ध्यान ओमहरे चल गेल। हम जङलाक आओर लग चल गेलहुँ। देखलहुँ जे सरायक मालिक ओहि युवकसँ लड़ि रहल अछि, जकरा ओ रातिमे टिकौने रहय। सराय बला साठि पाइ किराया मङत रहैक आ युवक चालिस पाइसँ अधिक देवक लेल तैयार नहि। हमरा सरायबलापर क्रोध भेल। हमरा नीकजकाँ मोन अछि जे रातिमे जगह देबाक काल चालिस पाइ किराया कहने रहैक।

हम नीचाँ उतरलहुँ। हमरा देखतहि सराय-मालिक चमकि उठल, आ बाजल " हे देखह, इएह आबि गेलाह एक भलमानुस। हिनका साइकिलो छनि। ई तोरा जकाँ गमार नहि छथि। आब इएह कहताह जे की उचित आ की अनुचित। तों आयल रहह दू आदमी आ जा रहल छह तीन आदमी। हमरा परतारिकऽ तेसर आदमीक किराया पचबय चाहैत छह। "

हमर चिन्ता जल्दीए दूर भऽ गेल। रातिमे जखन चारू दिस बिहाड़ि हड़कम्प मचौने छल, तखन सरायमे एकटा दोसरे घटना घटल। एहि दम्पतिकेँ एकटा पुत्ररत्न जन्म लेने छलैक, आ भोरे सराय मालिक एहि तेसर अप्रत्याशित प्राणिक किराया ठोकि देने रहैक।

हमरा रहितहुँ झगड़ा फरिछा नहि रहल छल। पिताकेँ पुत्र-प्राप्तिक गर्व रहैक। एहि कारणेँ ओ एकटा गाड़ीवानकेँ सेहो रोकि लेने रहय। गाड़ीवान आब चलक लेल अगुता रहल छलैक। हम एहि अवसरकेँ तकितहिँ रही जे कखन एहि झगड़ामे मध्यस्थ भऽ ठाढ़ भेल जाय, कि ता अनायासे ओ दुनू शान्त भऽ गेल। सभक आँखि मुँह निहारए चाहलहुँ। ता देखलहुँ जे भीतरसँ एकटा युवती अपन अमूल्य पोटरीकेँ छातीमे सटौने आबि रहलि अछि। छनभरि ओ तीक्ष्ण दृष्टिएँ दुनू लड़ऽबला दिस तकलक। ओकर मुँह आधा झापल रहैक, मुदा रहैक बड़ सुन्नर।

"चिल्हकोक किराया अहाँ दऽ दिऔक।" ओ अपन मरदकेँ कहलक। सराय बलाकेँ अन्दाज नहि रहैक जे ई झगड़ा एना फड़िछायत। युवतीक बातपर ओ हीं-हीं करैत दाँत निपोड़ि देलक आ विनम्रतासँ बाजल, "हँ-हँ , ठीक कहै छथि। चलह, नहि पूरा तँ आधो दऽ दएह। ओना जँ तों ई बात मानि जाह जे चिल्हकाक किराया लेबाक हमर हक जायज अछि तँ हम ताहूसँ संतोष कय लेब।"

"एकरा चिल्हकाक पूरा किराया दऽ दियौक।" गाड़ी दिस बढ़ैत युवती अपन

पतिकेँ फेर कहलक, " जनम लितहिँ हमर बेदरा ककरो कर्जदार किएक रहत ? की एकर कोनो प्रतिष्ठा नहि ?"

" हे लैह !" युवक सरायबलापर किरायाक पाइ फेकि देलक। सरायबला बिना कोनो उत्साहक ओकरा लपकि लेलक आ बिहाड़ि-पानिक गप हाँकऽ लागल।

ओ दम्पति आ ओ तेसर प्राणी सब गाड़ी लग पहुँचि गेल रहय। पर्वतपर मेघ जुटय लागल छल। ओना भिनसुरका मेघ ओहने होइछ जेहन बकरीक ढूसि- गरजत बेसी, बरिसत कम। संस्कृतमे एहने सन कोनो श्लोक हम पढ़ने रही। खैर, चलक लेल आब हमहूँ तैयारे रही। सरायबलाक मुँह कने लजायल - सन भऽ गेल रहैक। ओ दूर चल जाइत गाड़ीकेँ देखि रहल छल।